VOLUME IX, ISSUE I
April 2020

OPEN ACCESS

ISSN 2277 - 8071
IMPACT FACTOR 5.411
DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
INDEXED IN 52 DATABASES

J-Gate

# RESEARCH NEBULA

AN INDEXED, REFEREED & PEER REVIEWED QUARTERLY JOURNAL

Chief Editor
**DR. GANESH PUNDLIKRAO KHANDARE**
**Yashwantrao Chavan Arts and Science Mahavidyalaya, Mangrulpir Washim Maharashtra**
**ganukhandare7@rediffmail.com**
**gpkenglish@gmail.com**
**Cell 919850383208**

JOURNAL FACTOR
WEB BASED JOURNAL MANAGEMENT SYSTEM
Scholarsteer
WWW.YCJOURNAL.NET

PRINCIPAL
Shivaji College, HINGOLI

DOI PREFIX 10.22183 | Journal DOI 10.22183/RN

An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences

ISSN 2277-8071 | SJIF 5.411

Research Paper in Hindi

MEMBER OF Crossref | OPEN ACCESS | J-Gate INDEXED

# सत्ता की अमानुषिकता और कला का संघर्ष नाटक 'हानूश'

प्रा. सुधीर गणेशराव वाढे

सहायक प्राध्यापक,
हिंदी विभागप्रमुख,
शिवाजी महाविद्यालय,
हिंगोली (महाराष्ट्र)

**ABSTRACT**

*भीष्म साहनी विद्यार्थी जीवन से ही रंगमंच से जुडे थे। उन्हें रंगमंच की बारीकियों का काफी ज्ञान है। 'हानूश' नाटक में हानूश की मानसिक यातना, दवंद्व, सृजनशीलता, संवेदनशीलता, तन्मयता, तल्लीनता, करुणा और पीडा आदि मनोभावों को भी भीष्म साहनी ने सहज भाषा में बडी ऊष्मा और आंतरिक छुअन के साथ अभिव्यक्ति दी है। घडी के नाजुक पुर्जों को छूने की उसकी कोमलता और आकुलता के अनुरुप ही भाषा और संवादों की अत्यंत नाजुक गठन है, जिसे इस नाटक में महसूस किया जा सकता है। 'हानूश' अपने आपमें बहुत लचीला नाटक है।*

***KEYWORDS:*** *कलाकार का सृजनशील संघर्ष, कलाकार की स्थायी मानसीकता, कलाकार की मानसिक यातना, दवंद्व, सृजनशीलता, संवेदनशीलता, तन्मयता, तल्लीनता, करुणा और पीडा।*

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक भारतीय परिवेश की जीवंत अभिव्यक्ति का प्रामाणिक दस्तावेज है। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जन-जीवन में पर्याप्त परिवर्तन आया, तो हिन्दी नाटक भी उस बदले परिवेश की अभिव्यक्ति करने लगा।[1] नाटक जनजागरन का सशक्त माध्यम है | नाटक दृश्य और श्रव्य भी है | अभिनय रंगमंच की अपनी भाषा है | अभिनय के अवसर संवादों के बीच से संवाद के शब्दों के बीच उभरते हैं | इस दृष्टि से संवाद संघटन का विशेष महत्त्व है | कभी कभी स्थिति यह होती है कि संवाद के शब्दों के कुछ और अर्थ निकलते हैं जबकि अभिनय के दवारा कुछ और अर्थ की अपेक्षा होती है | इन बारीकियों को समझने के लिए केवल प्रतिभा ही नहीं रंगमंच से जुडा नाटककार का अनुभव भी अनिवार्य होता है| साठोत्तरी हिन्दी नाटकों में शैली, शिल्प् और विशेषकर कथ्य् के इतने व्यापक, बहुमुखी और वैविध्यपुर्ण प्रयोग संभव हुए कि नाटक की संरचना एवं रूपबंध में आमूल परिवर्तन हो गया और कहीं गहरे नाटय रचना विधान की दृष्टि से नाटक की सम्पेषणीयता का आधार उसकी कथ्य चेतना पर अनिवार्यत: निर्भर हो गई है।[2]

मानवीय मूल्यों की स्थापना ही नाटक एंव रंगमंच का मुख्य उद्देश्य है जिसके मूल में मानवीय संवेदना निहित है | भीष्म साहनी ने हानूश (1977),कबीरा खडा बाजार में (1981) एवं माधवी (1984) में लिखकर जहाँ नाटक की दुनिया में अपना योगदान दिया, वहीं रंगमंच और रंगदर्शन को एक सफल कृति भेंट की | यह बात तो पूरी तरह से तय है कि साहित्यकार जिस युग और परिवेश में जीता है उसकी समस्याएँ, उसकी विसंगतियाँ प्रश्न बनकर उसके मन को कुरेदती रहती हैं | अन्य विधाओं की अपेक्षा नाटककार के लिए ऐसे प्रश्नों से कुछ ज्यादा ही जुझना पडता है, जिसका संबंध एक समूह से हो अगर वह आम आदमी से संबध्द हो तो नाटककार की वह अनुभूति और अधिक व्यापक बन सकती है | इसलिए नाटक में देखनेवालों के लिए या देखनेवालों की चीज मौजुद हो यह जरुरी होता है, इसके अभाव में यह समस्त आयोजन ही व्यर्थ हो जाता है | इसलिए नाटककार को जीवन जगत् और अपने परवेश की उन्हीं स्थितियों को नाटक में स्वीकार करना पडता है, जो अधिक से अधिक दर्शक को अपनी अनुभूति लगे | भीष्म साहनी विद्यार्थी जीवन से ही रंगमंच से जुडे थे | उन्हें इन बारीकियों का काफी ज्ञान है |

'हानूश' की दंत कथा के माध्यम से भीष्म साहनी ने कलाकार की स्थायी मानसीकता का परिचय दिया है। "भीष्म साहनी ने एक संघर्षशील कलाकार की कला को वाणी दी है |"[3] लिखने के पिछे एक घटना का भीष्म साहनी उल्लेख करते है| 1960 के आस-पास भीष्म

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN | An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences | ISSN 2277-8071
SJF 5.411

साहनी चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग घूमने गए हुए थे | प्राग शहर में घूमते हुए संयोगवश उन्होंने वहाँ की वह ऐतिहासिक मीनारी घडी देखी जिसके संबंध में वहाँ कई दंतकथाएँ प्रचलित हैं | सार जिसका इतना है कि घडी के निर्माता कलाकार घडीसाज कारीगर को तत्कालीन बादशाह द्वारा अजीब तरीके से पुरस्कृत किया गया था | बादशाह ने उस कलाकार कारीगर की आँखे निकलवा ली थीं शायद इसीलीए वह पुन: दूसरी घडी न बना सके | इसी किंवदन्ती को भीष्म साहनी ने नाटक के ताने बाने में बुनकर हानूश के रुप में प्रस्तुत किया | नाटककार ने मध्ययुग का एक भरा पूरा परिवेश गढा काल्पनिक घटना विन्यास द्वारा कथावस्तु का निर्माण किया और कथा का भार ढोने के लिए उपयुक्त चरित्र गढे | नाटककार ने इस संबंध में स्वीकार किया है, उनका उद्देश्य एक मानवीय स्थिति को मध्ययुगीन परिवेश में प्रस्तुत करना रहा है |

इस उपन्यास का प्रमुख पात्र हानुस है| लगभग पाँच सौ वर्ष पहले प्राग नगर में हानूश नाम का एक ताला मिस्त्री रहता था | उसका भाई एक पादरी था | परिवार में पत्नी और एक बच्ची थी | बाद में एक निराश्रित जेकन को भी परिवार में रख लिया गया | जेकन ताले बनाने का काम करता और कात्या उसे बाजार में बेच आती | इस प्रकार पूरे घर का खर्च चलता | हानूश ने अन्य लोगों से कहीं घडी बनाएगा अ हानूश ने नगर के एक शिक्षक से गणित के हिसाब किताब की बातें समझीं लुहार से आवश्यक औजार बनवाए ओर पादरी भाई की मदद से चर्च से अनुदान उपलब्ध कराकर काम में जुट गया | स्थिति यह हो गई कि घडी बनाने के चक्कर में हानूश का परिवार आर्थिक विपन्नता का शिकार हो गया | क्योंकि जो कलाकार परिवार का खर्च चलाता था, अब वह घडी बनाने में व्यस्त हो गया था | चर्च से जो अनुदान मिलता था, वह घडी के पुर्जे में ही खप जाता था | परंतु जेकन ने उस परिवार में एक नई रोशनी की तरह प्रवेश किया | उसके ताले बाजार में बिकने लगे और परिवार का खर्च चलने लगा | लेकिन इस बीच पंद्रह सोलह वर्ष गुजर गए | जेकन के आ जाने से हानुश को भी मदद मिली | हानूश उसे जब तब घडी का तंत्र समझता रहता और उससे सहायता लेता रहता |

निराश हानूश जेकन के आ जाने से एक बार पुन: हिम्मत जुटाने में सफल हुआ और घडी बनाने में लग गया | इस तरह सत्रह वर्ष गुजर गए | हानूश की लगन और मेहनत को देखकर कुछ शुभचिंतको ने उस शर्त पर नगर के व्यापारियों से मदद दिलाई कि घडी के बन जाने पर घडी को उन्हीं लोगों की इच्छानुसार स्थान पर स्थापित किया जाए | इन सत्रह वर्षो में न जाने वह कितनी बार टूटा फिर भी एक अनजानी शक्ति उसे खींचकर अपनी और ली ही जाती | न जाने कितने घात प्रतिघात झेलने के बाद पारिवारिक विपन्नता और अभावग्रस्तता की सीमाओं से गुजरने के बाद आशा और निराशा के अनेक झटके खाने के बाद अंतत: हानूश घडी बनाने में सफल हो गया |

हानूश अपने भाई पादरी का आभारी था, जिसने प्रारंभिक सहायता दिलवाई और सदैव उत्साहित करता रहा | अपने परिवार के प्रति कृतज्ञ था, जिसने दु:ख तकलीफ सहकर एक महान् कलाकृति गढने में मदद की और उन व्यवसायियों के प्रति आभारी था, जिन्होंने अंतिम समय में सहायता करके मंजिल तक पहुँचने में अपना योगदान दिया | यद्यपि व्यवसायियों की मदद में अपना निजी स्वार्थ अंतर्निहित था | वे घडी के महत्त्व को समझते थे | वे यह भी समझते थे कि अगर घडी बन गई तो इस घडी के द्वारा वे न केवल बादशाह पर ढीले हो रहे अपने वर्ग के प्रभाव को मजबूत बना सकेंगे अपितु देश का गिरता हुआ बाजार भी फिर से समृध्द हो सकेगा | बादशाह पर चर्च और दादरियों का विशेष प्रभाव था | बादशाह के दरबार में व्यवसायियों का प्रतिनिधित्व भी स्वल्प था | इसलिए हानूश की घडी जब बनकर तैयार हुई तो व्यवसायी वर्ग ने उस घडी को नगर के बीच चौराहे में लगवाने का और बादशाह से उद्घाटन कराने का निश्चय किया |

बाजार को गती देने के लिये कुछ लोग चौराहे पर घडी लगाने की बात करते है| दरअसल बाजार की गति मंद थी | व्यवसायियों का खयाल था कि अगर चौराहे पर घडी लगी तो लोग इसे देखने के बहाने यहाँ अवश्य आएँगे ओर इसी बहाने विक्री का माहौल बनेगा | बाजार में रौनक आएगी | व्यवसाय का न चलना उनके जीवन मरण का प्रश्न था | यह उनकी दूसरी



PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI



DOI PREFIX 10.22183
JOURNAL DOI 10.22183/RN
An International Refereed, Peer Reviewed & Indexed Quarterly Journal in Arts, Commerce, Education & Social Sciences
ISSN 2277-8071
SJF 5.411

विजय होगी | व्यवसायियों का यह अनुमान था कि बादशाह घडी के उद्घाटन के अवसर पर न केवल हानूश को पुरस्कृत और सम्मानित करेंगे वल्कि उनके आवेदन पर व्यापारी वर्ग के प्रतिनिधित्व को बढाना भी मंजूर करेंगे | यह उनकी तीसरी विजय होगी | बाद में घडी का छोटे पैमाने पर निर्माण और व्यवसाय भी उनका लक्ष्य है | वस्तुतः व्यापारियों का अनुमान गलत नहीं रहता | वे चर्च और शासन धर्म और बादशाही की काफी दिनों से चली आ रही दुरभिसंधि को तोड सकने में सफल होंगे ऐसा उनका अनुमान सफल होता दिखाई देता है | जिसमें प्राग की आर्थिक स्थिति और व्यापारिक परिवेश पतनोन्मुख और विस्फोटक स्थिति में उबरक पुनःसामान्य स्थिति ग्रहण कर सकेगी | वैसा होता भी है, केवल हानूश के पुरस्कृत और सम्मानित किए जाने तथा घडी का व्यापार करने का उनका अनुमान कुछ गलत सावित होता है |

हानूश बहुत खुश है | हानूश द्वारा निर्मित घडी उसी व्यस्त चौराहें में लगा दी जाती है | बादशाह उद्घाटन करते हैं | उस अनोखी घडी को देखने के लिए भीड उमड पडती है | सबकी जुबान पर हानूश का नाम चढा होता है | नगर की जनता के अलावा बादशाह के द्वारा भी हानूश को पुरस्कृत और सम्मानित करने की घोषणा की गई | हानूश को सम्मानस्वरूप दरबारी का सम्मानित पद और पुरस्कार स्वरुप सरकारी वृत्ति प्रदान की गई | मान सम्मान यश और प्रतिष्ठा पाकर हानूश का ह्दय खुशी से गदगद था | परंतु पर्दे के पीछे क्रूर नियति कुछ और ही कुचक्र रच रही थी |

उस समय बादशाह पूरी तरह से चर्च ओर पादरियों के प्रभाव में थे, उनकी इच्छा थी कि घडी चर्च में लगाई जाए | क्योंकि घडी के निर्माण में चर्च का विशेष योगदान है | बादशाह की भी इच्छा यही थी | लेकिन हो सकता है कि बादशाह के मन में घडी अपने महल में लगवाने की रही हो और जो कुछ हुआ उसकी इच्छा के विरोध में हुआ हो | बादशाह को यह सब अपमान लगा हो अथवा चर्च और पादरियों के खिलाफ व्यापारियों का उठता सिर बादशाह को अच्छा न लगा हो या हानूश ऐसी कोई दूसरी घडी न बना दे जिससे उस घडी की प्रतिष्ठा गिर जाए | कारण कुछ भी रहा हो, बादशाह ने आदेश दिया कि इसकी आँखे निकाल ली जाएँ और बादशाह के आदेश से हानूश की आँखे निकाल ली जाती हैं | आँखे तो जिंदगी होती हैं | हानूश क्या कोई भी व्यक्ति आँखो के बिना विक्षिप्त हो सकता है | यह विक्षिप्तता हानूश की यहाँ तक बढ जाती है कि कभी खुद ही समाप्त कर देने की बात सोचता है, तो कभी उस घडी को विनष्ट कर देने की बात सोचता है | उसके मन में यह बात घर कर जाती है कि अंधत्व का कारण यह घडी ही है |

सामंती प्रशासन द्वारा एक कलाकार का यह अनूठा अभिनंदन जिसने एक ऐसे कलाकार भीष्म साहनी जिसका उस घटना से कोई संबंध न होते हुए भी, के ह्दय में भी एक ऐसी आग सुलगा दी थी जिसे लावे के साथ कभी ज्वालामुखी की तरह फुटना ही था | एक दूसरा विस्फोट जेकन के भीतर भी सुलग रहा था | वह घडी का भेद छिपाए किसी तरह प्राग से बाहर भागने में सफल हो जाता है | हानूश भी उस संताप से जल रहा था | कभी घडी को तो कभी खुद को खत्म करने की कोशिश में | लेकिन जब घडी खराब हो गई तो उसे पुनः घडी के निकट जाना पडा | किन्तु क्या वह घडी को नष्ट कर सकता है ? क्या कोई कलाकार अपनी कृति को नष्ट कर सकता है ? हो सकता है, पर हानूश ऐसा नहीं कर सका | महाराज के आदेश से पकडने आए हुए अधिकारी से उसने यह वाक्य कहा कि मेरी ही घडी के पास मुझे घसीटकर ले जाओगे या चलिए साहब, मैं आपके साथ चलूँगा | मैं आपके साथ एक वफादार कुत्ते की तरह आपके कदमों में लोटता हुआ चलूँगा, क्योंकि मैंने एक दिन घडी बनाई थी | घडी के निकट पहुँचकर हानूश का सरल कलाकार ह्दय ठीक उसी प्रकार सहज वात्सल्य से ओत प्रोत हो उठा जिस प्रकार किसी बीमार बच्चे को देखकर उसका पिता विचलित हो उठता हे | उसने घडी को दुरुस्त कर पुनः चालू कर दिया | हानूश का द्वंद्व अनुभव और भावनात्मक स्पर्श का ऐंद्रिक अनुभूति के स्तर पर पाठक के मर्म को गहराई तक कचोटता है | अत्यंत कारुणिक और मार्मिक | अंत में हानूश का यह कथन नाटक के लक्ष्य को सामने लाता है घडी बन सकती है, घडी बंद भी हो सकती है, लेकिन यह बहुत बडी बात नहीं है | जेकन चला गया, ताकि



PRINCIPAL Shivaji College Hingoli

158 157 153



घडी का भेद जिंदा रह सके | यही सबसे बडी बात है | क्राति सृजन मनुष्य और उसके भविष्य में विश्वास इस नाटक का मूल बिंदू है | घडी चलने है, घडी बंद नहीं होती | इसी में हानूश अर्थात् कलाकार या रचनाकार की सृजनेच्छा उसके संकल्प और मानवीय अस्मिता में निष्ठा निहित है |

'हानूश' भीष्म साहनी का पहला नाटक है | भीष्म साहनी प्रवृत्ति से नाटककार के रुप में अवश्य सफल हुए हैं परंतु किसी आग्रह या आंदोलन या कलात्मक पक्ष का सामने रखनेवाले या हिंदी नाटक में शिल्प या रंगमंच की कोई नई अवधारणा प्रस्तुत करने की दृष्टि से उन्होंने नाट्य रचना नहीं की है | क्योंकि वह स्वभावत: कथाकार हैं |जहाँ तक सवाल नाट्य भाषा है, नाट्य भाषा भी नाट्य के दृश्यपक्ष उसकी रंगमंचीयता को साकार करने का सबसे बडा आधार है | नाटक में शब्द की उचित और सार्थक जगह तलाश लेना शब्दों का संयोजन उनके मेल से उत्पन्न होनेवाली लय, लयों का अन्तर और वेपरीत्य, ध्वनियाँ संकेत बिंब सब मिलकर नाटक को सृजन तक लाते हैं | प्राय: भीष्म साहनी के कहानी उपन्यास की तरह उनके संवादों में स्वाभाविकता है और उनका लहजा बहुत ही सहज है, जैसे आरंभ मं कात्या के संवाद एक घरेलू पत्नी की मानसिकता उसके अनुभवों की यंत्रणा को उसी के मुहावरे में व्यक्त करते हैं | हानूश की मानसिक यातना द्वंद्व सृजनशीलता संवेदनशीलता, तन्मयता, तल्लीनता, करुणा और पीडा आदि मनोभावों को भी उन्होंने सहज भाषा में बडी ऊष्मा और आंतरिक छुअन के साथ अभिव्यक्ति दी है | घडी के नाजुक पुर्जो को छुने की उसकी कोमलता और आकुलता के अनुरुप ही भाषा और संवादों की अत्यंत नाजुक गठन है, जिसे तृतीय अंक में महसूस किया जा सकता है | हानूश अपने आपमें बहुत लचीला नाटक है | नाटक का अपने शिल्प में लचीला होना उसकी अनिवार्य शर्त मानी जाती है | यही लचीलापन हानूश के नाटक में भी है एक घरेलू सहज प्रवाह, बोलचाल की भाषा का सार्थक स्वरुप | कुल मिलाकर नाटक भाषा के निरर्थक विस्तार को काटता है और भाषा के बिना भी संकेतों के माध्यम से बहुत कुछ कहता है |

अंततः कहा जा सकता है कि कला और कलाकार के सृजनशील संघर्ष को सामने लाकर सत्ता के भीषण स्थायी चरित्र को उजागर किया है। हानूश और उसकी कला तो प्रतिकात्मक स्थिति है। सृजनशील कलाकार की यह व्यक्तिगत त्रासदी नहीं है अपितु अपने आप में यह एक सामुहिक त्रासद घटना है। कला और कलाकार के सृजनशील संघर्ष की इसी प्रकार प्रभावशाली प्रस्तुति इस नाटक में की है।

संदर्भ:-

1. वर्मा दिनेशचंन्द्र, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक समस्याएँ और समाधान अनुभव प्रकाशन कानपुर, प्र. सं. - 1987 पृ-31
2. लवकुमार लवकुमार, समकालिन हिन्दी नाटक सृष्टि और दृष्टि, भावना प्रकाशन, दिल्ली-110091,प्र. सं. - 1997 पृ-88
3. गौतम वीणा, हिन्दी नाटक आज तक, शब्द सेतु प्रकाशन कथ्य क ए-139 गली नं-3 कबीर नगर दिल्ली प्र. सं. - 2002 पृ-376

T.C.

Assistant Professor
Shivaji College,Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)



SHIVAJI COLLEGE HINGOLI
PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli